## अशोक रक्ताले 'फणीन्द्र'

**जन्मतिथि – 08.08.1960**
**जन्मस्थान- उज्जैन**
**पिता का नाम – स्व. श्री गुणवन्त एन. रक्ताले**
**माता का नाम – श्रीमती उषा गुणवन्त रक्ताले**
**मोबाइल नं. – 9827256343**

अँधियारा है गाँव में, रूठ गई जब धूप।
पथरीली सड़कें हुईं, बिगड़ गया है रूप।।
बिगड़ गया है रूप, बँटी टुकड़ों में खेती।
कहीं उगा है धान, कहीं बस उड़ती रेती।
रक्ताले कविराय, विलग है कुनबा सारा।
ले रुपयों की भूख, बढ़ाए नित अँधियारा।।

**********

बहुकाता है भोर को, उपवन का शृंगार।
साँसों घुलती गंध भी, करती चीख पुकार।।
करती चीख पुकार, हृदय सुन फागुन आया।
भरी बालियाँ देख, बनीं हिलमिल सरमाया।
रक्ताले कविराय, चले अब धूल उड़ाता।
वेग पवन का तेज, कदम सबके बहकाता।।

**********

ढलती जाती उम्र से, बन्द हुए संवाद।
और मिला है ढेर-सा, हर दिन ही अवसाद।।
हर दिन ही अवसाद, चाह जीवन की छीने।
बीत रहे हैं वर्ष, दिवस पल घड़ी महीने।
रक्ताले कविराय, न अब आशा ही पलती।
होती जाती खत्म, उम्र यह ढलती-ढलती।।

**********

बंजर होंगे खेत सब, सूखे होंगे ताल।
कैसी होगी साँझ वह, जो न दिखेगी लाल।।
जो न दिखेगी लाल, दिखेगी मात्र उदासी।
बिन पतझड़ वन शुष्क, दिखेंगे बारहमासी।
रक्ताले कविराय, चुभाओ मत यूँ खंजर।
नित्य बचाओ नीर, न हो यह धरती बंजर।।

**********

नाचो गाओ झूम के, बड़ी न दिन से रात।
मत उदास बैठो अभी, करो ख़ुशी की बात।।
करो ख़ुशी की बात, देख फूली अमराई।
टेसू पर है रंग, बाग़ पर है तरुणाई।
रक्ताले कविराय, झूम कर आओ-आओ।
छेड़ो मोहक फाग, रंग ले नाचो गाओ।।

**********

बीता जीवन दौड़ते, करते गढ़ हर पार।
लेकिन फिर लौटा नहीं, उधर दूसरी बार।।
उधर दूसरी बार, गईं ले यादें सारी।
नव पीढ़ी ने पैर, बढ़ाया जब इस बारी।
रक्ताले कविराय, लगा सब रीता-रीता।
लगा गया सब हार, वक्त मुश्किल से बीता।

**********

आसानी से जो मिले, उसे व्यर्थ मत मान।
बिन प्रकाश पानी हवा, नहीं बचेगी जान।।
नहीं बचेगी जान, मान ले बात हमारी।
इतना भी इंसान, न बन भोला भण्डारी।
रक्ताले कविराय, न उपजे धन से पानी।
समझ बात नादान, बहुत होगी आसानी।।

**********

अभी बढ़ाओ तो सही, पेंग प्यार की एक।
खुल जायेंगे मार्ग खुद, फूलों भरे अनेक।।
फूलों भरे अनेक, चमन पथ में महकेंगे।
घने बैर के शूल, जलेंगे सब दहकेंगे।
रक्ताले कविराय, नहीं बिलकुल घबराओ।
मन में ले उत्साह, कदम तुम अभी बढ़ाओ।।

**********

जीवन के सब प्रश्न अब, सुलझेंगे हर हाल ।
नया भोर है सामने, बदल रहा है काल ।।
बदल रहा है काल, साथ बदलें तुम-हम भी ।
पाएँ सुख सौगात, सहें थोड़े से गम भी ।
'रक्ताले' कविराय, करें हम ऐसी सीवन ।
उधड़ न पाएँ दुःख, फले-फूले यह जीवन ।।

**********

नफ़रत जो बाकी रही, पूर्ण न होगा काम।
इसका करके ही चलूँ, किस्सा यहीं तमाम।।
किस्सा यहीं तमाम, मुझे अब करना होगा।
तभी सफ़र में पाँव, ज़ीस्त के धरना होगा।
रक्ताले कविराय, दम्भ के ढाकर पर्वत।
करना होगा दूर, दिलों से सारी नफ़रत।।

**********